वो पक्षी जो कभी हाथी था!

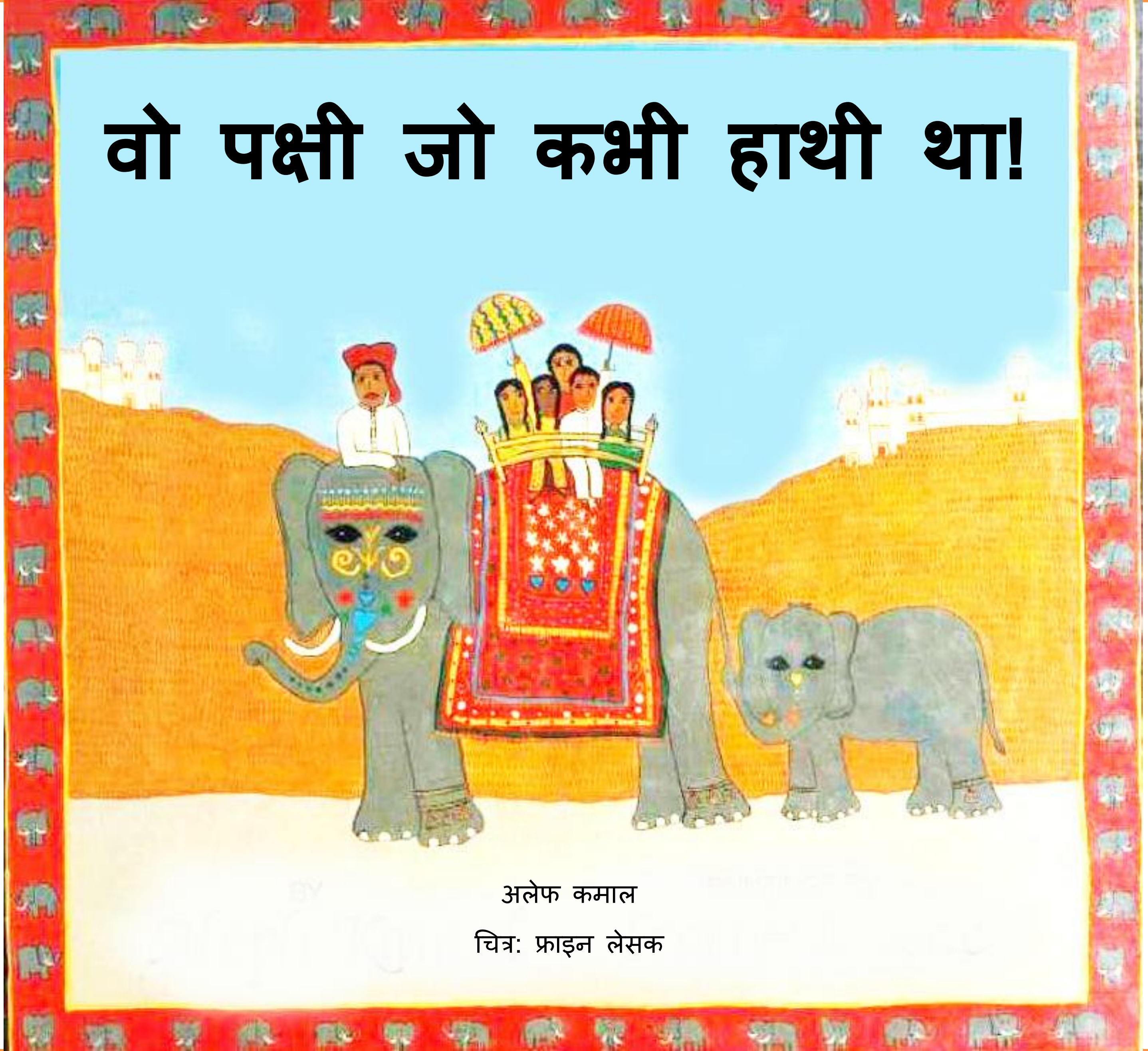

अलेफ कमाल

चित्र: फ्राइन लेसक

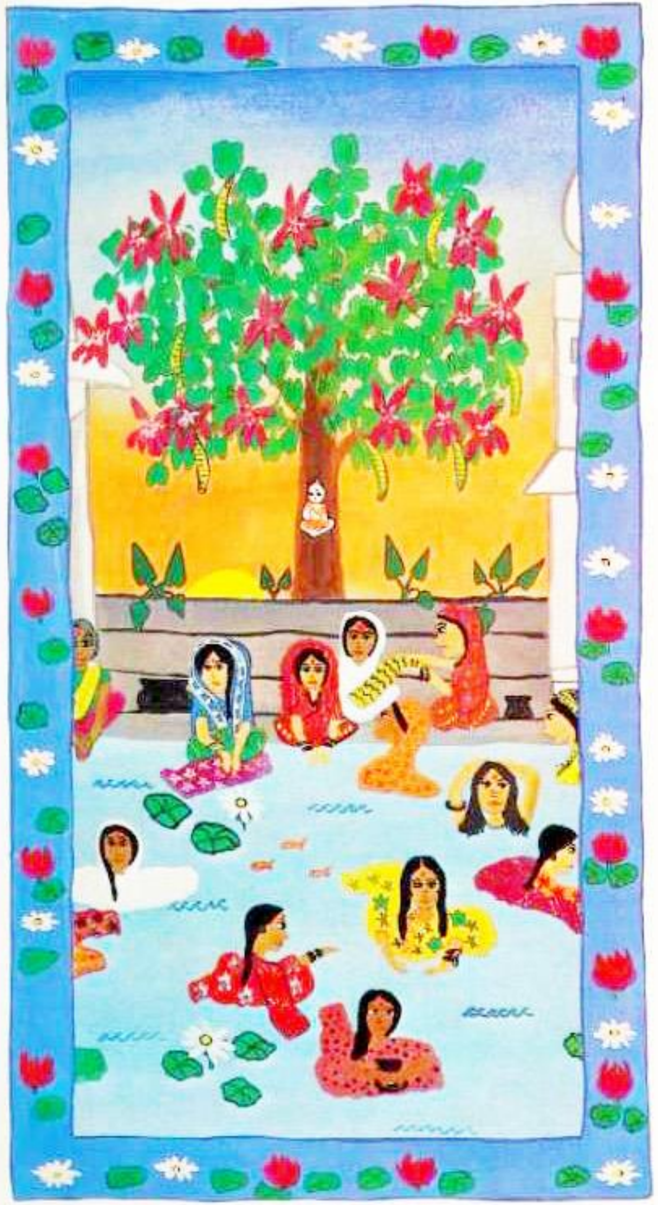

वो पक्षी जो कभी हाथी था!

अलेफ कमाल

चित्र: फ्राइन लेसक

अभी सुबह काफी जल्दी थी जब वो पक्षी रेगिस्तान से उड़कर आया. लेकिन पहले से ही सूरज की किरणों से गांव में उबाल आ रहा था.

नीचे नदी के बीच में स्नान करने वाली महिलाएँ सूर्य को नमस्कार कर हँस रही थीं और एक-दूसरे पर छींटे मार रही थीं. चिड़िया को ऊंचाई से, लाल और हरी और पीली साड़ियाँ सुंदर फूलों की तरह लग रही थीं, जैसे कमल और गेंदे के फूल पानी में तैर रहे हों.

फिर चिड़िया ठंडी डुबकी लगाने के लिए नदी में उतरी.

गाँव की गली व्यस्त होती जा रही थी. दुकानें अगल-बगल खड़ी थीं, उनके दरवाजे खुले हुए थे. सभी अपना माल दिखा रहे थे. मिठाई बेचने वाला, दर्जी, दंत-चिकित्सक, जौहरी और साहूकार.

चिड़िया मसालों की दुकान पर बैठी. वहां से अदरक, जायफल, धनिया की अद्भुत महक आ रही थी... ओह, कितनी सुन्दर खुशबू!

चावल के खेतों में काम करने वाले मजदूर चाय की दुकान पर समोसे और पकौड़े खा रहे थे. वे अपनी चाय को, प्लेट में उंडेल कर पी रहे थे, जैसा कि भारत के इस भाग में आमतौर पर किया जाता था.

चाय की दुकान के ऊपर हस्तरेखा देखने वाले एक ज्योतिषी का साइन-बोर्ड लगा था. केवल पाँच रुपये में ज्योतिषी आपके हाथ का अध्ययन करेगा और आपको आपका अतीत और भविष्य बताएगा.

दस रुपये में वो आपको यह भी बता सकता है कि आप पिछले जन्म क्या थे और भविष्य में आप क्या होंगे.

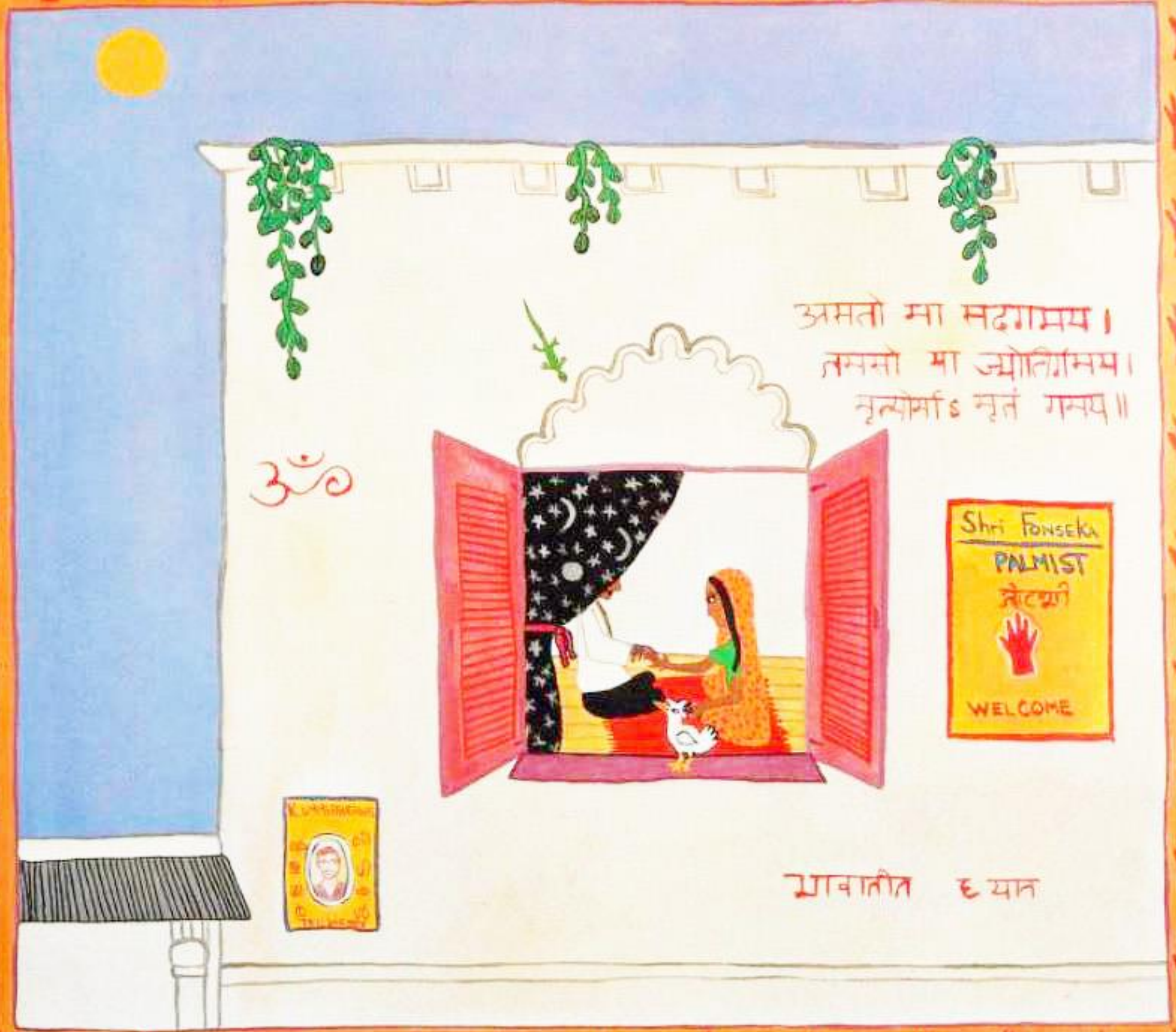

चिड़िया ने ज्योतिषी की खिड़की से उड़ान भरी.

"अरे ज्योतिषीजी, आप ये बातें कैसे बता सकते हैं?

"आपकी हथेली आपके जीवन का नक्शा होती है, इसलिए मैं देख सकता हूं कि पहले क्या हुआ और आगे क्या होगा."

"अरे ज्योतिषीजी, मेरे पास पैसे नहीं हैं, लेकिन कृपया मुझे यह बताएं कि मैं दो हजार साल पहले क्या थी!"

"चलो देखता हूँ. मुझे अपना दाहिना पंजा दिखाओ."

ज्योतिषी ने पंजे की एक रेखा को ध्यान से नापा.

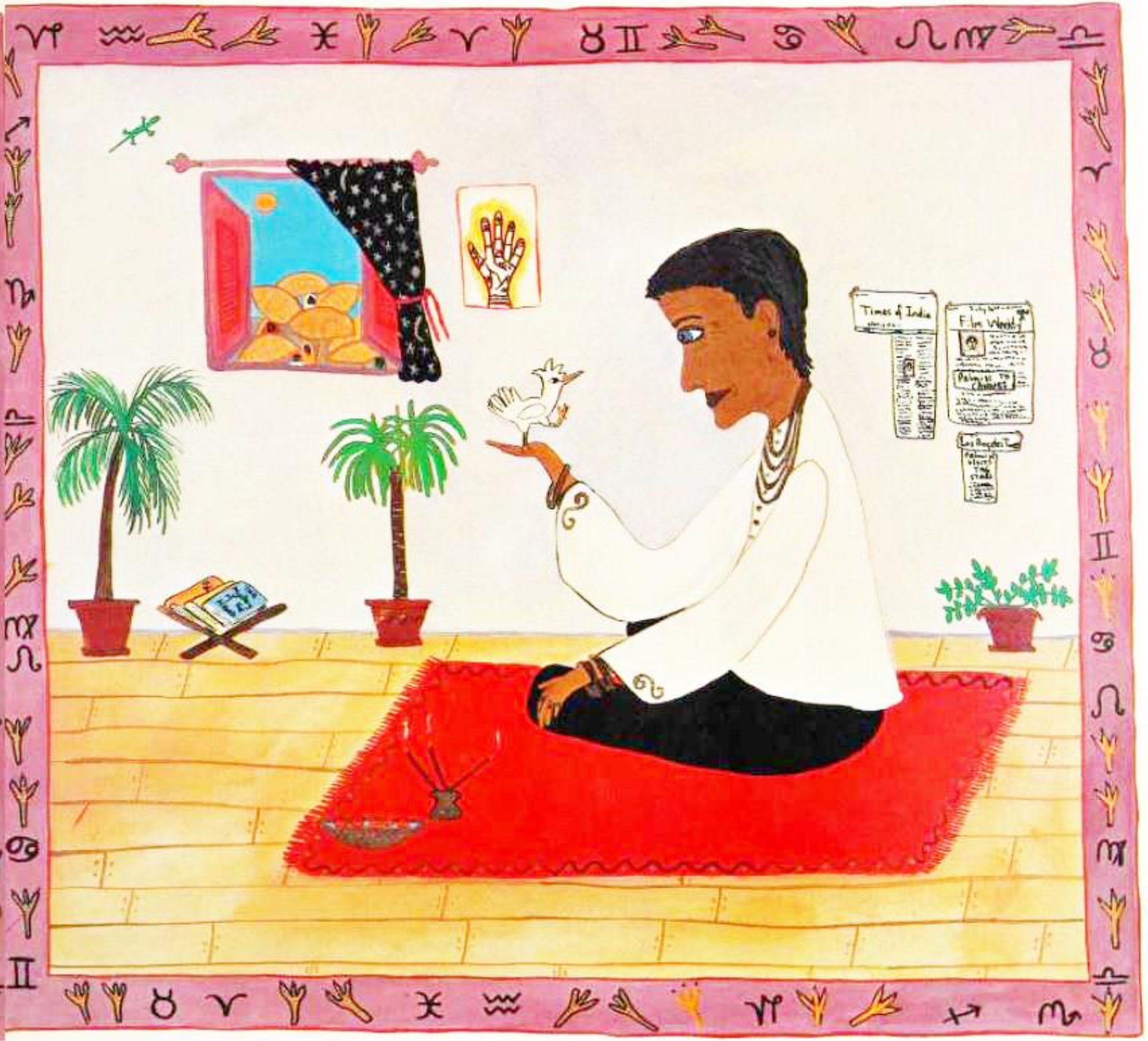

"दो हजार साल पहले, तुम एक हाथी थीं. तब तुम्हारा काम एक महाराजा के महल के बगीचे में, बच्चों को अपनी पीठ पर बिठाकर घुमाना था."

चिड़िया समझ नहीं पाई कि भला एक बड़ा हाथी एक छोटे से पक्षी में कैसे बदल सकता था.

"अब मैं कब तक एक पक्षी रहूंगी?"

"बहुत लंबे समय के लिए नहीं," ज्योतिषी ने उत्तर दिया. "देखो, दुनिया में सब कुछ बदलता रहता है"

"और मैं अगली बार क्या बनूंगी?"

"समुद्र की एक मछली," ज्योतिषी ने उत्तर दिया.

ज्योतिषी ने आगे कहा, "आज के लिए बस इतना ही."

"आप बहुत धन्यवाद!" चिड़िया का कहा और वो फिर से गली में उड़ गई.

गली, ध्वनि से जीवंत थी. रेडियो पर एक प्रेम गीत बज रहा था. एक किसान की बैलगाड़ी उसके प्याज और आलू की बोरियों को लेकर धीरे-धीरे बाज़ार की ओर बढ़ रही थी. एक भिखारी औरत और उसके दो बच्चे फ़टे कपड़े पहने हुए, हाथ फैलाए भीख मांग रहे थे और दुनिया को अपनी दुखद कहानी सुना रहे थे.

सड़क के नीचे एक पवित्र गाय अपने गले में नारंगी गेंदे की माला पहने ध्यान कर रही थी.

"मैं वापिस आ गई हूँ," चिड़िया ने कहा. "यहाँ पर नया क्या चल रहा है?"

पवित्र गाय ने कुछ नहीं कहा. उसकी अपनी बड़ी भूरी-भूरी आँखें से बहुत दूर देखा.

कहा जाता है कि ज्ञानी जीव बहुत कम शब्दों का प्रयोग करते हैं.

फिर नारंगी रंग की धोती पहने एक आदमी आया, उसके बाल और दाढ़ी उलझी हुई थी और उसका माथा सफेद और लाल रंग से पुता हुआ था.

"और आप कौन है?" चिड़िया ने पूछा.

"मैं एक साधु हूँ."

"साधु कौन होता है?"

"जिसके पास केवल एक जोड़ी कपड़े होते हैं जो वो पहने होता है. मेरे पास मेरी धोती, मेरी चटाई, खाने और पीने के लिए मेरा कटोरा है. मेरा कोई घरबार नहीं है. मैं जीवन के बारे में अधिक जानने के लिए भारत की यात्रा कर रहा हूं."

एक सपेरे के पास कुछ ग्रामीण जमा हो गए थे. सांप, सपेरे की बीन की धुन पर एक आलसी नृत्य कर रहा था.

"मैं वापिस आ गई हूँ," चिड़िया ने कहा.

"नमस्ते," सांप ने कहा. "बहुत दिनों से तुम्हें नहीं देखा... बाद में मेरे साथ नाश्ता करने आ जाना?"

"नहीं मुझे अभी कुछ और काम है," चिड़िया ने घबराकर उत्तर दिया, और फिर वो विपरीत दिशा में उड़ गई.

जमीन, सूर्य के नीचे भाप बन रही थी और चिड़िया भूखी और गर्म थी. चिड़िया ने एक टपकते नल से पानी पिया. पानी बहुत मीठा था.

जब फल और सब्जी विक्रेता एक गृहिणी के साथ सौदेबाजी में व्यस्त थे, तब चिड़िया ने एक खजूर को और फिर एक केले पर अपनी चोंच मारी. लेकिन तभी दुकानदार ने देख लिया और चिड़िया की ओर जोर से ताली बजाई. फिर चिड़िया उड़ गई....

सूरज गाँव से दूर पश्चिम की ओर खिसक रहा था. चाय की दुकान के बाहर पवित्र गाय चपाती मांग रही थी. फिर उसने एक और चपाती मांगी.

पहाड़ों से आई ट्रेन, स्टेशन पर पहुँच गई, उसके डिब्बे लोगों से इस तरह भरे हुए थे, जैसे गठरी में कसकर फूल भरे हों. भाप के इंजन ने हवा में धुआं उड़ाया. प्लेटफार्म पर एक आदमी मिट्टी के प्यालों में चाय बेच रहा था. स्टेशन मास्टर एक फॉर्म भर रहा था. कुछ बच्चों ने चिड़िया की ओर अपना हाथ लहराया. एक साधु ने एक बार कहा था कि अगर आप एक दिन और एक रात के लिए रेलवे स्टेशन पर इंतजार करें, तो आपके सामने पूरी दुनिया खुल जाएगी.

अब चिड़िया का पसंदीदा समय था. अब सूर्य एक सुनहरी धुंध की तरह, हर चीज को घेरे हुए था. जब पृथ्वी से धूल उठकर सुनहरी धुंध में शामिल होती तो एकदम जादू हो जाता था.

फिर चिड़िया उड़कर वानर देवता हनुमान के मंदिर में घुस गई. धूप, चंदन और चमेली की गंध, घंटियों की आवाज और मंत्रो के उच्चारण से हवा भरी थी. पत्थर की मूर्तियों को मालाओं और फूलों ने ढक दिया था. चिड़िया भी लोगों में शामिल हो गई, और जोर-जोर से गाने लगी.

मंदिर के बाहर मोर अभी भी जमीन पर परेड कर रहे थे. बंदर बकबक कर रहे थे और इस बात पर झगड़ रहे थे कि कौन कहां सोएगा.

चिड़िया को भी किसी पेड़ पर आराम करने की जगह ढूंढनी थी. चंद्रमा, धीरे-धीरे, काले आकाश में अपना रास्ता तलाश रहा था. रात ने सारी आवाजें और शोर को शांत कर दिया था. चांदनी में तीन चूहे नाच और खेल रहे थे.

चिड़िया थक गई थी.

लेकिन घर वापिस आकर उसे अच्छा लग रहा था.
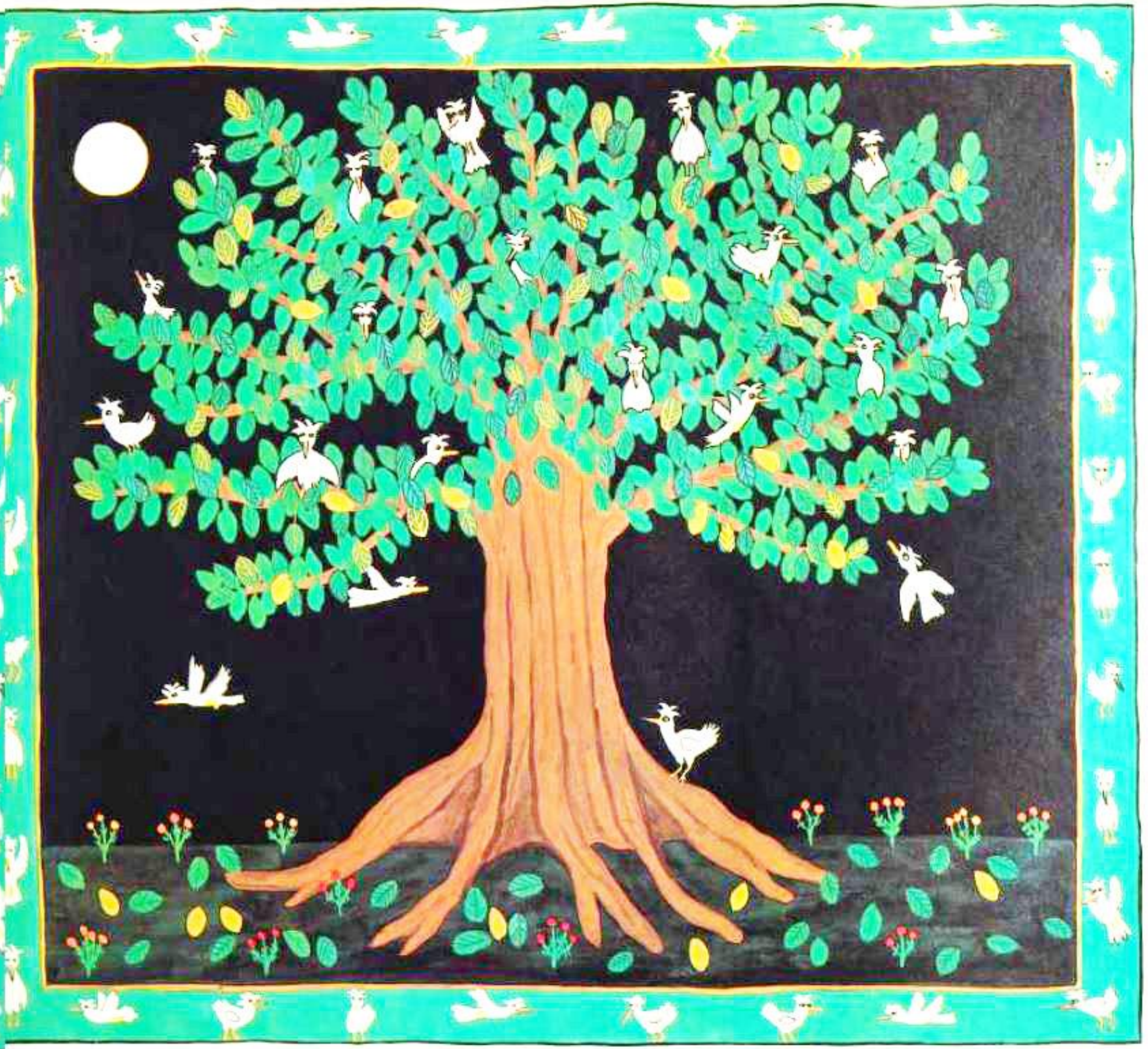
अंत